अध्याय 6 – शक्ति का अहंकार

अगली सुबह आरव अपने कॉलेज जाने की तैयारी कर रहा था।

दादाजी भोजन की मेज पर बैठे उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

आरव ने आते ही कहा—

“सुप्रभात, दादाजी!”

“सुप्रभात, बेटा। आओ, बैठो।”

आरव भोजन करने लगा, लेकिन दादाजी का ध्यान उसके चेहरे पर था।

कुछ क्षण बाद उन्होंने पूछा—

“आरव, तुम्हारा वह नया मित्र कैसा है?”

“युवराज?”

“हाँ, वही।”

“अच्छा है। थोड़ा अपने धन का प्रदर्शन करता है, लेकिन धीरे-धीरे हमारे साथ घुल-मिल रहा है।”

दादाजी ने पूछा—

“और यदि किसी दिन वह तुम्हारे साथ अनुचित व्यवहार करे तो?”

आरव हँसने लगा।

“दादाजी, अभी मित्रता हुई है और आप शत्रुता की बात करने लगे।”

दादाजी के चेहरे पर हल्की मुस्कान आ गई।

“मैं केवल इतना समझाना चाहता हूँ कि प्रत्येक मुस्कुराते हुए व्यक्ति के मन में तुम्हारे लिए प्रेम हो, यह आवश्यक नहीं है।”

आरव ने भोजन करते हुए कहा—

“आप चिंता मत किया कीजिए। आपका पोता अब बड़ा हो गया है।”

दादाजी ने उसकी ओर देखा।

“हाँ बेटा, तुम बड़े तो हो गए हो। लेकिन तुम्हें अभी जीवन के बहुत से अनुभव प्राप्त करने हैं।”

आरव ने भोजन समाप्त किया, अपना बैग उठाया और दादाजी के चरण स्पर्श करके कॉलेज के लिए निकल गया।

दादाजी उसे जाते हुए देखते रहे।

कभी-कभी किसी अपने को आने वाली कठिनाइयों से बचाने की इच्छा होते हुए भी व्यक्ति परिस्थितियों के सामने विवश होता है।

दादाजी भी शायद ऐसी ही किसी विवशता से गुजर रहे थे।

शक्ति का प्रदर्शन

कॉलेज के प्रांगण में आज सामान्य दिनों की अपेक्षा अधिक भीड़ थी।

अनेक विद्यार्थी एक स्थान पर एकत्र होकर किसी चीज को देख रहे थे।

आरव ने वहाँ पहुँचकर देखा कि वीर, ईशा और काव्या भी उसी भीड़ के पास खड़े थे।

“क्या हो रहा है यहाँ?”

वीर ने कहा—

“आओ भाई, आज युवराज महाराज अपनी शक्तियों का प्रदर्शन कर रहे हैं।”

प्रांगण के बीच में युवराज खड़ा था।

उसने अपना हाथ सामने किया।

कुछ ही क्षणों में उसकी हथेली के ऊपर अग्नि का एक छोटा सा गोला उत्पन्न हो गया।

आसपास खड़े विद्यार्थी उत्साहित हो उठे।

युवराज ने अपनी हथेली घुमाई और अग्नि का गोला हवा में ऊपर उठने लगा।

फिर उसने अपना हाथ बंद किया और अग्नि गायब हो गई।

विद्यार्थियों ने तालियाँ बजाईं।

युवराज ने गर्व से चारों ओर देखा।

“यह तो मेरी सबसे साधारण शक्ति है।”

एक विद्यार्थी ने उत्सुकता से पूछा—

“तुम्हारे पास और कौन-कौन सी शक्तियाँ हैं?”

युवराज मुस्कुराया।

“सभी एक साथ दिखा दीं तो कल देखने के लिए क्या बचेगा?”

विद्यार्थी हँसने लगे।

युवराज की दृष्टि काव्या को खोज रही थी।

उसे विश्वास था कि उसकी शक्तियाँ देखकर काव्या अवश्य प्रभावित हुई होगी।

लेकिन काव्या आरव के साथ अपनी आगामी कक्षा के विषय में बातचीत कर रही थी।

युवराज उनके पास पहुँचा।

“काव्या, तुमने मेरी शक्ति देखी?”

“हाँ, बहुत अच्छी थी।”

“बस, बहुत अच्छी?”

काव्या हँसने लगी।

“तो और क्या कहूँ? तुम्हें पुरस्कार दूँ?”

वीर और ईशा भी हँसने लगे।

युवराज ने अपनी मुस्कान बनाए रखी।

फिर उसने आरव की ओर देखा।

“तुम्हें मेरी शक्ति कैसी लगी?”

आरव ने कहा—

“अच्छी है। यदि कभी किसी की सहायता करने के लिए उपयोग करोगे, तो और भी अच्छी लगेगी।”

युवराज को यह उत्तर पसंद नहीं आया।

उसे प्रशंसा की अपेक्षा थी, उपदेश की नहीं।

समानता का भ्रम

कुछ देर बाद सभी कैंटीन में बैठे थे।

युवराज ने अपने मोबाइल पर शक्तियों की कंपनी का एक विज्ञापन खोला।

“देखो, अगले सप्ताह नई शक्तियाँ उपलब्ध होने वाली हैं।”

वीर ने मोबाइल की स्क्रीन की ओर देखा।

“इनकी कीमत देखकर लगता है कि इन्हें खरीदने के लिए पूरा जीवन काम करना पड़ेगा।”

ईशा ने कहा—

“पूरा जीवन काम करने के बाद भी खरीद पाओगे या नहीं, इसकी कोई निश्चितता नहीं है।”

युवराज हँसने लगा।

“इसीलिए तो मैं तुम लोगों से कहता हूँ कि जीवन में बड़ा सोचो।”

आरव ने पूछा—

“बड़ा सोचने का अर्थ अधिक धन कमाना है?”

“और क्या?”

“यदि कोई शिक्षक बनकर हजारों विद्यार्थियों का भविष्य सुधारता है, लेकिन उसके पास अधिक धन नहीं है, तो क्या उसकी सोच छोटी है?”

युवराज कुछ क्षण शांत रहा।

फिर बोला—

“तुम हमेशा ऐसी बातें क्यों करते हो, आरव? संसार वास्तविकता से चलता है, विचारों से नहीं।”

आरव ने मुस्कुराकर उत्तर दिया—

“लेकिन संसार को बदलने वाली प्रत्येक वास्तविकता कभी न कभी किसी व्यक्ति का विचार ही रही होगी।”

काव्या ने आरव की ओर देखकर मुस्कुराया।

युवराज ने दोनों के चेहरे देखे।

अब उसे आरव की प्रत्येक बात में कोई न कोई कमी खोजने की इच्छा होने लगी थी।

पहली चेतावनी

दोपहर में कक्षा समाप्त होने के बाद सभी मित्र मुख्य भवन से बाहर निकल रहे थे।

तभी एक विद्यार्थी शीघ्रता में सीढ़ियों से उतरते हुए युवराज से टकरा गया।

उसके हाथ में रखा पानी युवराज के महँगे वस्त्रों पर गिर गया।

विद्यार्थी घबरा गया।

“क्षमा करना भाई, मैंने तुम्हें देखा नहीं।”

युवराज ने अपने वस्त्रों की ओर देखा।

“तुम्हें पता भी है इन कपड़ों की कीमत कितनी है?”

“मुझसे गलती हो गई। मैं साफ कर देता हूँ।”

विद्यार्थी ने अपनी जेब से रूमाल निकालना चाहा।

लेकिन युवराज ने उसका हाथ पकड़ लिया।

“तुम जैसे लोगों को इस कॉलेज में प्रवेश कैसे मिल जाता है?”

विद्यार्थी ने सिर झुका लिया।

आसपास खड़े लोग देखने लगे, लेकिन कोई आगे नहीं आया।

तभी आरव ने युवराज के कंधे पर हाथ रखा।

“जाने दो। उसने जानबूझकर नहीं किया।”

युवराज ने पीछे मुड़कर देखा।

“तुम प्रत्येक विषय में बीच में क्यों आते हो?”

“क्योंकि तुम मेरे मित्र हो। और यदि मेरा मित्र कुछ अनुचित कर रहा है, तो उसे समझाना मेरा कर्तव्य है।”

युवराज ने उस विद्यार्थी का हाथ छोड़ दिया।

लेकिन उसके चेहरे पर क्रोध स्पष्ट दिखाई दे रहा था।

आरव ने विद्यार्थी से कहा—

“तुम जाओ। कोई बात नहीं।”

विद्यार्थी ने आरव को धन्यवाद दिया और वहाँ से चला गया।

युवराज ने आरव के निकट आकर कहा—

“एक बात ध्यान रखना, मेरी मित्रता का अर्थ यह नहीं है कि तुम मुझे नियंत्रित कर सकते हो।”

आरव ने शांत स्वर में उत्तर दिया—

“और तुम्हारी शक्ति का अर्थ यह नहीं है कि तुम किसी का अपमान कर सकते हो।”

दोनों कुछ क्षण एक-दूसरे को देखते रहे।

काव्या ने आरव का हाथ पकड़कर कहा—

“चलो, हमें देर हो रही है।”

सभी वहाँ से आगे बढ़ गए।

युवराज वहीं खड़ा रहा।

उसके मन में आरव के प्रति क्रोध धीरे-धीरे बढ़ रहा था।

भय और सम्मान

कॉलेज से कुछ दूरी पर एक चाय की दुकान थी।

चारों पुराने मित्र वहाँ कुछ समय बिताने के लिए रुक गए।

वीर ने आरव से पूछा—

“तुम्हें युवराज से इस प्रकार उलझने की क्या आवश्यकता थी?”

आरव ने कहा—

“मैं उससे उलझ नहीं रहा था। केवल उसे समझा रहा था।”

ईशा ने चिंतित स्वर में कहा—

“लेकिन वह बहुत शक्तिशाली परिवार से है। कॉलेज के अधिकारी भी उसके सामने कुछ नहीं कहते।”

आरव कुछ क्षण शांत रहा।

“यही तो समस्या है, ईशा। जब किसी अनुचित कार्य को देखकर सभी मौन हो जाते हैं, तब उसे करने वाले व्यक्ति को लगने लगता है कि वह जो कर रहा है, वही उचित है।”

वीर ने कहा—

“लेकिन प्रत्येक व्यक्ति से लड़कर संसार नहीं बदला जा सकता।”

“मैं संसार बदलने नहीं निकला हूँ, वीर। केवल इतना चाहता हूँ कि जो मेरे सामने हो रहा है, उसमें मैं स्वयं अनुचित का साथ न दूँ।”

काव्या आरव की बातें सुन रही थी।

उसने कहा—

“मुझे तुम्हारी यही बात सबसे अच्छी लगती है। लेकिन कभी-कभी मुझे तुम्हारी यही आदत चिंतित भी करती है।”

आरव ने पूछा—

“क्यों?”

“क्योंकि जब तुम किसी दूसरे की चिंता करते हो, तब स्वयं की चिंता करना भूल जाते हो।”

आरव ने मुस्कुराकर उसका हाथ पकड़ लिया।

“मेरी चिंता करने के लिए तुम हो न?”

काव्या मुस्कुरा दी।

“हाँ, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि तुम मुझे प्रतिदिन चिंतित करने का कार्य करो।”

चारों हँसने लगे।

एक निर्णय

उधर युवराज अपनी कार में बैठा हुआ था।

उसके मन में आज की दोनों घटनाएँ चल रही थीं।

पहले काव्या उसकी शक्तियों से प्रभावित नहीं हुई और फिर आरव ने सभी के सामने उसे अनुचित सिद्ध कर दिया।

उसने अनुभव किया कि जब भी वह स्वयं को आरव से श्रेष्ठ सिद्ध करने का प्रयास करता है, परिस्थितियाँ उसके विपरीत हो जाती हैं।

उसने अपना मोबाइल निकाला और किसी परिचित व्यक्ति को फोन किया।

“मुझे तुम्हारी थोड़ी सहायता चाहिए।”

दूसरी ओर से प्रश्न किया गया।

युवराज ने कहा—

“मेरे कॉलेज में आरव नाम का एक विद्यार्थी है। मुझे उसके और उसके परिवार के विषय में जानकारी चाहिए।”

दूसरी ओर से कुछ कहा गया।

युवराज ने उत्तर दिया—

“नहीं, अभी उसे कुछ नहीं करना है। पहले मैं जानना चाहता हूँ कि वह वास्तव में कौन है। उसके परिवार में कौन-कौन है, उसकी आर्थिक स्थिति क्या है और वह कहाँ रहता है।”

फोन रखने के बाद युवराज मुस्कुराया।

“प्रत्येक व्यक्ति की कोई न कोई कमजोरी अवश्य होती है, आरव। तुम्हारी भी होगी।”

युवराज अभी तक आरव की सबसे बड़ी कमजोरी खोज रहा था।

लेकिन उसे क्या पता था कि जिस युवक को वह एक साधारण विद्यार्थी समझ रहा था, उसके जीवन का सबसे बड़ा रहस्य तो स्वयं आरव भी पूरी तरह नहीं जानता था।

अध्याय 6 समाप्त।